शैक्षिक सत्र–2026–27

(8) ट्रेड––नर्सरी शिक्षण का प्रशिक्षण एवं शिशु प्रबन्ध

कक्षा–11

उद्देश्य––

शिशु देश की सम्पत्ति हैं। प्रारम्भ से ही उनका उचित देख–भाल करना राष्ट्रीय कर्तव्य है। शिशु शिक्षा पर विशेष ध्यान देकर उसके प्रसार से इस लक्ष्य की पूर्ति सम्भव है। प्राथमिक शिक्षा हेतु सार्वजनीकरण के लिये भी शिशु शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा के व्यावसायीकरण की दृष्टि सें भी इण्टरमीडिएट के पाठ्यक्रम में शिशु–शिक्षा विषय का समावेश कर हम छात्रों को स्वावलम्बी बनाने में सहायक होंगे इसके अतिरिक्त भावी माता–पिता अपनी संतान का लालन–पालन करने में इस विषय के अध्ययन में समर्थ होंगे।

इस पाठ्यक्रम का विशिष्ट उद्देश्य यह है कि छात्र/छात्रायें इस रूप में प्रशिक्षित हों कि वे शिशुशालाओं का संचालन स्वयं कर सके। पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि उनके शाला की गतिविधियों व कार्यक्रम के संचालन हेतु अपेक्षित ज्ञान क्षमता व सही दृष्टिकोण विकसित हो सके।

स्कोप––

यह पाठ्यक्रम निश्चय ही छात्रों को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने व विभिन्न शिशुशालाओं में शिक्षण कार्य करने हेतु सक्षम बनायेगा। इस प्रकार यह विषय छात्रों को नौकरी के अवसर प्रदान करने तथा स्वयं शिशुशाला या बाल–बाड़ी खोलकर उसका संचालन कर स्वावलम्बी बनाने में समर्थ बनायेगा।

पाठ्यक्रम––

इस ट्रेड में तीन–तीन घंटे के पांच प्रश्न–पत्र और प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। अंकों का विभाजन निम्नवत् रहेगा :

	पूर्णांक		उत्तीर्णांक	
(क) सैद्धान्तिक––				
प्रथम प्रश्न–पत्र	60	300	20	100
द्वितीय प्रश्न–पत्र	60		20	
तृतीय प्रश्न–पत्र	60		20	
चतुर्थ प्रश्न–पत्र	60		20	
पंचम प्रश्न–पत्र	60		20	
(ख) प्रयोगात्मक––	400		200	

नोट––परीक्षार्थियों को प्रत्येक लिखित प्रश्न–पत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 20 तथा योग में 33 प्रतिशत अंक एवं प्रयोगात्मक परीक्षा 50 प्रतिशत उत्तीर्णांक पाना आवश्यक है।

प्रथम प्रश्न–पत्र

(शिशु शिक्षा तथा विद्यालय संगठन)

खण्ड (क)

(1) पाश्चात्य व भारतीय संदर्भ में शिशु शिक्षा का विकास।	8
(2) विभिन्न शिक्षाविदों के सिद्धान्त व शिशु शिक्षण प्रणालियां।	8
(3) शिशु शिक्षा की आवश्यकता, उद्देश्य व स्वरूप।	8
(4) शिशुशाला के प्रकार।	6

खण्ड (ख)

(1) आदर्श शिशुशाला की योजना एवं निर्माण–ग्रामीण तथा शहरी दोनों।	10
(2) शिशुशाला की साज–सज्जा व खेल सामग्री।	10
(3) आयु वर्गानुसार––पाठ्यक्रम, समय विभाग चक्र व क्रिया––कलाप।	10

द्वितीय प्रश्न–पत्र

(बाल मनोविज्ञान)

(1) बाल मनोविज्ञान–ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि,विषय विस्तार अध्ययन की विधियां तथा महत्व एवं उपयोगिता	12
(2) अभिवृद्धि तथा विकास––जन्म के पूर्व से लेकर किशोरावस्था तक।	12
(3) वंशानुक्रम तथा वातावरण।	12
(4) मूलप्रवृत्ति तथा जन्मजात सामान्य प्रवृतियां।	12

(5) शिशु विकास के प्रमुख पहलू––शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक ज्ञानात्मक, बौद्धिक भाषा तथा कल्पना विकास। 12

तृतीय प्रश्न–पत्र
(शिशु स्वास्थ्य व शरीर विज्ञान)
खण्ड (क)

(1) शिशुशाला में स्वास्थ्य शिक्षा का अभिप्राय, क्षेत्र तथा महत्व। 16

(2) शिशु के सर्वागीण विकास में स्वास्थ्य का महत्व तथा शिशुशाला का योगदान। 14

खण्ड (ख)

(1) विभिन्न ज्ञानेन्द्रियां, संरचना व कार्य, रोग कारण तथा बचने के उपाय व उपचार। 16

(2) निम्न अंग यंत्रों का अध्ययन–– 14

स्नायु संस्थान, पाचन तथा विसर्जन तंत्र।

श्वसन तंत्र, रक्त परिवहन तंत्र, प्रजनन प्रक्रिया।

चतुर्थ प्रश्न–पत्र
मुख्य शिक्षण विधियां (भाषा, गणित)
खण्ड (क)

(1) शिशु जीवन में भाषा का महत्व। 10

(2) भाषा विकास की अवस्थायें व प्रभावित करने वाले तथ्य और बाल शिक्षार्थियों के सिद्धान्त। 10

(3) भाषा कौशल, अवस्थायें (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना)। 10

खण्ड (ख)

(1) शिशु जीवन में गणित का महत्व। 16

(2) गणित प्रत्यय बोध की आवश्यकतायें सिद्धान्त। 14

पंचम प्रश्न–पत्र
(शिशु शिक्षा की सहायक शिक्षण विधियां)
खण्ड (क)––सामाजिक विषय

(1) सामाजिक विषय शिक्षण का स्वरूप व महत्व। 8

(2) आयु वर्गानुसार सामाजिक विषय का पाठ्यक्रम। 6

खण्ड (ख)––प्रकृति विज्ञान व विज्ञान

(1) प्रकृति विज्ञान व विज्ञान शिक्षण का स्वरूप एवं महत्व। 8

(2) आयु वर्गानुसार प्रकृति विज्ञान व विज्ञान विषय का पाठ्यक्रम। 6

खण्ड (ग)––कला एवं हस्तकला

(1) शिशु जीवन में कला एवं हस्तकला का महत्व। 8

(2) आयु वर्गानुसार कला एवं हस्तकला का पाठ्यक्रम। 6

खण्ड (घ)
खेल व संगीत

(1) खेल व संगीत शिक्षण का महत्व। 6

(2) आयु वर्गानुसार संगीत व खेल का पाठ्यक्रम। 6

(3) शिशु विकास में संगीत व खेल का योगदान। 6

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम तथा प्रयोगात्मक परीक्षा की रूपरेखा

(क) कला शिक्षण।

(ख) कला, हस्तकला, सिलाई।

(ग) सहायक उपकरणों का निर्माण।

(घ) संगीत (भाव गीत, शिशु गीत) व खेल।

(ङ) शिशु––विकास का व्यक्तिगत व सामूहिक निरीक्षण लेखा––

(1) प्रयोगात्मक परीक्षा . . . . 200 अंक

(2) . . . . 200 अंक

(क) सत्रीय कार्य पर––

(ख) कार्य–स्थल पर परीक्षण––

नोट : प्रयोगात्मक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये 50 प्रतिशत अंक पाना आवश्यक है।

संस्तुत पुस्तकें––

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशक का नाम	मूल्य
1	2	3	4	5
				रुपया
1	शिशुशाला में भाषा व गणित	वेदमणि दीक्षित	पंकज प्रकाशन, इलाहाबाद	30.00
2	बाल मनोविज्ञान बाल विज्ञान	डा0 श्रीमती प्रीति वर्मा, डा0 डी0 एन0 श्रीवास्तव	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	35.00
3	मातृ कला एवं शिशु कला	श्रीमती जी0 पी0 शेरी	तदेव	22.00
4	बाल मनोविज्ञान एवं बाल विज्ञान	––	यूनिवर्सल बुक सेन्टर, लखनऊ	52.50
5	स्वास्थ्य शिक्षा	––	तदेव	25.00

उपचारात्मक शिक्षण हेतु चार यूनिट टेस्ट निम्नलिखित है–

(i) प्रथम यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित) जुलाई द्वितीय सप्ताह 20 अंक

(10 अंक ग्रीष्मावकाश गृहकार्य + 10 अंक यूनिट टेस्ट)

(ii) द्वितीय यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित) अगस्त अन्तिम सप्ताह 20 अंक

(iii) तृतीय यूनिट टेस्ट (MCQ आधारित) नवम्बर अन्तिम सप्ताह 20 अंक

(iv) चतुर्थ यूनिट टेस्ट (वर्णनात्मक प्रश्न आधारित) दिसम्बर अन्तिम सप्ताह 20 अंक

नोट– उपरोक्त यूनिट टेस्ट उपचारात्मक शिक्षण के अन्तर्गत विद्यालय स्तर पर लिये जायेंगे। इनके प्राप्तांक परीक्षफल में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे।